GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

महाकुंभ : आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर

शोध निर्देशिका –
प्रोफेसर सुषमा पाण्डेय
शिक्षाशास्त्र विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0)

शोधार्थी –
रीमा कुशवाहा
शिक्षाशास्त्र विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0)

सारांश

महाकुंभ विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक आयोजन है। यह शास्त्र गृहस्थ साधन का समागम है। यहां किसी भी व्यक्ति को निमंत्रण नहीं दिया जाता इसमें हर वर्ग के व्यक्ति अपनी सहभागिता प्रस्तुत करते हैं। करोड़ो तीर्थ यात्री देश–विदेश से यहां पधारते हैं यह भारत देश के संस्कृति की एक अमूल्य धरोहर है। यहां तीर्थ यात्रियों, कल्प वासियों, स्नानार्थियों का मिलन होता है। इस आयोजन के दौरान श्रद्धालूगढ़ आरती, स्नान,कल्पवास दीपदान एवं त्रिवेणी संगम पर परिक्रमा करते हैं। यह आयोजन खगोल विज्ञान, ज्योतिष, अध्यात्म, अनुष्ठानिक परंपराओं एवं सामाजिक सांस्कृतिक रीति–रिवाज और प्रथाओं का अद्भुत संगम का प्रतीक है।

प्रस्तावनाः–

महाकुंभ भारतीय धर्म एवं संस्कृति का महा पर्व है। इसका आयोजन चार पवित्र स्थलों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में किया जाता है। भारतीय ज्योतिष और खगोल विज्ञान के अद्भुत संयोग के आधार पर इसका आयोजन किया जाता है। जिसमें सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पति एवं ग्रहों का विशेष निर्धारण होता है। इसका संबंध पौराणिक कथा में समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कलश से है। प्रयागराज में कुंभ मेला का आयोजन जब सूर्य और चंद्रमा मकर राशि में प्रवेश करते हैं तब होता है। हरिद्वार में जब बृहस्पति कुंभ राशि में और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तब कुंभ मेला का आयोजन होता है। नासिक में कुंभ मेला का आयोजन जब बृहस्पति और सूर्य सिंह राशि में होते हैं तब होता है।यह स्थिति धार्मिक और आध्यात्मिक अनुष्ठानों के लिए

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

श्रेष्ठ मानी जाती है उज्जैन में कुंभ मेला का आयोजन जब बृहस्पति सिंह राशि में और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तब होता है ।उज्जैन के महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग और शिप्रा नदी के तट पर यह आयोजन धर्म और आध्यात्मिकता का संगम होता है। इस समय में कुंभ स्नान को मोक्ष प्राप्ति का विशेष साधन माना जाता है।महाकुंभ की उत्पत्ति समुद्र मंथन के प्रसिद्ध पौराणिक कथा से होती है जो देवताओं और दानवों के बीच अमृत प्राप्ति के संघर्ष को प्रदर्शित करता है। पौराणिक कथा के अनुसार अमृत प्राप्त करने के लिए देवताओं और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन किया। समुद्र मंथन के पश्चात प्राप्त हुए अमृत कलश के लिए दानवों और देवताओं में संघर्ष होने लगा। इस संघर्ष के समय अमृत के कुछ वूंदे पृथ्वी के चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक पर गिरी। इन स्थानों को पवित्र माना गया और इन स्थानों पर महाकुंभ का आयोजन होने लगा।

महाकुंभ मे कल्पवास महत्त्वः—

कल्पवास एक साधना है जिसके माध्यम से मनुष्य संयम एवं नियंत्रण रखता है। पद्म पुराण में महर्षि दत्तात्रेय ने कल्पवास के बारे में बताया है कि पैंतालीस दिन तक कल्पवास करने वालों के लिए इक्कीस नियमों का पालन करना होता है जो इस प्रकार हैं सत्य वचन, अहिंसा, इंद्रियों पर नियंत्रण, सभी प्राणियों पर दया भाव, ब्रह्मचर्य, वासनाओं का त्याग, ब्रह्म मुहूर्त में जागना, नित्य तीन बार पवित्र नदी में स्नान, त्रिकाल संध्या, पितरों का पिंडदान, अंतर्मुखीजाप, सत्संग, संकल्पित क्षेत्र के बाहर न जाना, किसी भी की भी निंदा ना करना,साधु सन्यासियों की सेवा,जप और संकीर्तन, एक समय भोजन, भूमि शयन, अग्नि सेवन न करना, देव पूजन सम्मिलित है।इनमें सबसे अधिक महत्व ब्रह्मचर्य व्रत, उपवास,देव पूजन, सत्संग और दान का होता है। कल्पवास की प्रक्रिया में प्रथम दिन ही तुलसी और शालिग्राम की स्थापना और इनका पूजन किया जाता है तथा कल्पवास करने वाला व्यक्ति अपने पास जौ के बीज रोपते हैं। कल्पवास की अवधि पूर्ण हो जाने पर पौधे को अपने साथ लेकर जाते हैं और तुलसी को गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता है। पुराणों देवताओं कोभी मनुष्य का

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

दुर्लभ जन्म लेकर प्रयाग में कल्पवास करने की बात कही गई है। महाभारत में एक प्रसंग है है कि मार्कंडेय ने धर्मराज युधिष्ठिर से कहा था कि प्रयाग तीर्थ से सभी पापों का नाश हो जाता है कोई भी मनुष्य एक मास तक इंद्रियों को नियंत्रण में करके यहां पर स्नान ध्यान और कल्पवास करता है तो वह स्वर्ग में स्थान पाने का अधिकारी हो जाता है।

महाकुंभ में अखाड़े का महत्वः–

दशनामी नागा संन्यासियों के अखाड़े सबसे प्राचीन अखाड़े हैं। सबसे पहले 1266 ईस्वी में कुंभ के अवसर पर दशनामियों एवं महानिर्वाणी अखाड़ा बैरागियों के मध्य युद्ध का संक्षिप्त विवरण पाया गया जिसमें बैरागी पराजित हो गए थे। विभिन्न संप्रदायों व अखाड़े को कुंभ मेला के माध्यम से ऐसा मंच प्रदान किया गया है जिससे विभिन्न अखाड़ों के मध्य लाल मिल बैठाया जा सकेजिसे अखाड़ापरिषद के नाम से जाना जाता है। अखाड़े पंचायती संगठन तथा प्रजातांत्रिक प्रणाली में विश्वास करते हैं। अखाड़ा परिषद को सुव्यवस्थित ढंग से चलने हेतु अनेक पदाधिकारी का चुनाव सर्वसम्मति से कुंभ मेले के अवसर पर ही किया जाता है, विभिन्न अखाड़ों में नवीन सदस्यों को कुंभ के समय दीक्षा भी दी जाती है। महाकुंभ में विभिन्न अखाड़ों के माध्यम से भंडारा का आयोजन किया जाता है भोजन के समय साधु– संत तथा भक्तजन श्लोकों का उच्चारण करते हैं, भंडारा पूर्ण हो जाने पर बिगुल बजाया जाता है तथा ओम नमः पार्वतीपतये हर –हर महादेव का उद्‌घोष होता है। सभी महामंडलेश्वर अपने सेवकों के साथ नियत स्थान ग्रहण करते हैं तथा पवित्र प्रवचन के माध्यम से लोगों को लाभान्वित करते हैं। प्रवचन समाप्त हो जाने पर महामंडलेश्वरों के स्रोत पाठ, कपूर,फूल मालाओं से अर्चना करके बिगुलबजाया जाता है इस समय साधु संतों के माध्यम से श्रीमद् भागवत गीता के श्री कृष्ण – अर्जुन संवाद में पुरुषोत्तम योग काम के पन्द्रहवां अध्याय का वचन होता है।दशनामी अखाड़े से संबंधित संत वेदांत– दर्शन, गीता–दर्शन तथा शैव सिद्धांतों की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। वैष्णव संत अपने पंडालों में रामचरितमानस की अत्यंत मनोहर प्रस्तुति करते हैं। नानक शाही अखाड़े उदासीन

व निर्मल सिक्खधर्म व वेदांत आदि पर व्याख्यान का आयोजन करते हैं । भारत साधु समाज का गठन सन 1956ई. मे किया गया। सन् 1989 ईस्वी में इलाहाबाद केकुंभ के अवसर पर इसका महा अधिवेशन 31 जनवरी से 4 फरवरी 1990 तक हुआ।

महाकुंभ में शाही स्नान का महत्वः–

शाही स्नान का महाकुंभ मेले में महत्वपूर्ण स्थान होता हैमहाकुंभ में आए सामान्य व्यक्ति एवं साधु संत मिलाकर स्नान करते हैं। संगम में स्नान करने से सभी आत्माएं शुद्ध हो जाती हैं। यह आत्म शुद्धि, दैवीय आशीर्वाद और भविष्य में अच्छे कार्यों की शुरुआत का प्रतीक है। शाही स्नान का धार्मिक महत्व भगवान शिव से भी जुड़ा हुआ है क्योंकि महाकुंभ का आयोजन भगवान शिव के साथ जुड़े तीर्थों में होता है। शिव पुराण के अनुसार भगवान शिव ने स्वयं गंगा को अपने जटाओं में धारण किया था और गंगा में स्नान करने से समस्त पापों का नाश होता है, इस स्नान के समय मन, वचन और क्रिया की शुद्धि होती है जो व्यक्ति के जीवन के उद्देश्यों को समझने में सहायता प्रदान करती है । महाकुंभ का प्रथम स्नान मकर संक्रांति से शुरु होता है यह राज योगी स्नान के नाम से भी प्रसिद्ध है। शाही स्नान के बाद ही सामान्य जनता स्नान करती है।

महाकुंभ में सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम का महत्वः–

इस आयोजन में भारत के विभिन्न क्षेत्रों की कला, शिल्प और विरासत को प्रदर्शित करने के लिए विशेष प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है जिसके माध्यम से यहां पधारे हुए श्रद्धालुओं को देश की सांस्कृतिक विविधता का अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है। इन प्रदर्शनियों के माध्यम से वे केवल मनोरंजन ही नहीं करते बल्कि भारत की सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में भी शिक्षा प्राप्त करते हैं। कुंभ मेले में आध्यात्मिक कार्यक्रमों के अंतर्गत–योग, ध्यान उत्सव के लिए शिविर लगाए जाते हैं जहां आगंतुक योग का अभ्यास करते हैं। इन शिविरों का नेतृत्व प्रसिद्ध योगगुरुवों और आध्यात्मिक शिक्षकों के माध्यम से होता है। इसका वैश्विक महत्व मानवता की यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में रेखांकित है,जो शांति, एकता

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

और अंतर सांस्कृतिक रूप से भूमिका अदा करता है। महाकुंभ भारतीय संस्कृति धर्म और समाज का ऐसा संगम है जो न केवल भारत बल्कि संपूर्ण विश्व को एकता और सहिष्णुता का संदेश देता है।

उपसंहारः–

महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय परंपरा और आध्यात्मिकता का जीवंत प्रतीक है। इसकी पवित्रता, भव्यता,और विविधता इसे दुनिया के सबसे अनोखे आयोजनों में स्थान देती है। इस महान उत्सव के माध्यम से न केवल आस्था का अद्भुत संगम होता है, बल्कि यह भारत की सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्षता और वसुधैय कुटुंबकम की भावना का भी प्रतिबिंब है। वर्तमान समय में भारत आधुनिकता और प्रौद्योगिकी की ओर तेजी से बढ़ रहा है महाकुंभ हमारी प्राचीन परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। इस आयोजन के माध्यम से भारत में केवल अपने जड़ो को जोड़े रखता है, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक संदेश मिलता है कि आध्यात्मिकता और संस्कृति को किस प्रकार संरक्षित किया जा सकता है। महाकुंभ में करोड़ों व्यक्तियों का एक साथ आगमन, अनुशासन और सामूहिकता की भावना के माध्यम से यह अभिव्यक्त होता है कि भारत की प्राचीन व्यवस्थाएं वर्तमान समय में बहुत ही प्रासंगिक है इसे संरक्षित करना और आने वाली पीढियों के लिए बनाए रखना और भारतीय का कर्तव्य है। महाकुंभ केवल एक आयोजन मात्रा नहीं है यह तो उत्सव है– आध्यात्मिकता का, संस्कृतिका मानवता और एकता का। इसका महत्व समय के साथ बढ़ता जा रहा है इसे संजोकर रखना हमारी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के समान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. परिहार, अ, सिंह .(2022) "कुंभ का इतिहास और उसकी महत्ताका अध्ययन"। अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, 13(1),2278–6848
2. अरोरा, पी.(2013) "कुंभ मेला एक वैश्विक दृष्टिकोण" ।अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन पत्रिका,3(2), 56–72

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

3. गुप्ता, पी.(2018) "कुंभमेला एक वैश्विक घटना के रूप में रूसांस्कृतिक प्रभाव।" वैश्विक संस्कृत समीक्षा 22(4),97–113
4. मिश्रा जे.एसरू महाकुंभ पृथ्वी पर सबसे बड़ा शो।
5. मार्कण्डेय पुराण, कलकत्ता 1879
6. गिरि,पु. (2022) "दशनामी अखाड़े एवं कुम्भ मेला।" International Journal of Creativeresearch] Vol &10, Issue & 11, ISSN: 2320–2882